कवचच महेशानि चैलोक्यमङ्गलादिकां। नारदाय च यत्प्रोक्तं ब्रह्मपुचेशा धीमता॥ सनत्तुमारेशा पुरा योगीन्द्रगुक्वर्त्भना॥ २॥

श्रीनारद उवाच ॥

प्रसीद् भगवन् मह्यमज्ञानात् कुशिष्ठतात्मने। तवाङ्किपङ्गजरजोरागिणों भित्तमत्तमां॥३॥ अज प्रसीद् भगवनिमतद्यितपञ्जर। श्रामय प्रसीदासाइः खहन् पुरुषोत्तम ॥ ४ ॥ स्वसंवद्य प्रसोदासमदानन्दातमन्त्रामय। अचिन्यसार् विश्वात्मन् प्रसीद् परमेश्वर ॥ ५ ॥ प्रसीद तुङ्ग तुङ्गानां प्रसीद शिव शोभन। प्रसीद् ग्रामभीर गम्भीराणां महाद्यते॥ ६॥ प्रसीद् व्यक्त विस्तीर्ण विस्तीर्णानामगोचर। प्रसीदाद्रीद्रजातीनां प्रसीदान्तान्तदायिनां॥ ७॥ ग्रोगरीयः सव्वेश प्रसीदानन दे हिनां। जय माधव मायात्मन् जय शाख्वत शङ्घस्त्॥ ८॥ जय शङ्घर स्रोमन् जय नन्दकनन्दन। जय चक्रगदापाण जय देव जनाहन ॥ ६॥ जय रत्नवराब इिकारी टाकान्तमस्तक। जय पश्चिपतिच्छायानिम्हार्ककराम्या॥ १०॥ नमस्ते नरकाराते नमस्ते मधसूदन। नमस्त लिलितापाङ्ग नमस्त नरकान्तक॥ ११॥